Celebrating 20 years

Celebrating 20 years

मानव जीवन विकास समिति

वार्षिक प्रतिवेदन

वर्ष 2021-2022

पता– ग्राम बिजौरी, पोस्ट मझगवॉ (बरही रोड) जिला कटनी (म.प्र.)

पिन कोड – 483501

फोन नं. – 07626–275223, 275232, 9425157561

Celebrating 20 years

Celebrating 20 years

अनुक्रमणिका

क्रं.	विषय/गतिविधियां ।	पृष्ठ सं.
1	**दो शब्द (राजगोपाल पी.व्ही.)** **आभार (निर्भय सिंह)**	03 04
2	**समिति का** (परिचय, विजन, मिशन) **ट्रेनिंग सेंटर**	05 06
3	**समिति के 10 स्तम्भ ।**	07
4	**समिति के उद्धेश्य,** **कार्यक्रमों की उम्मीदें, रणनीति ।**	08 09
5	**समिति का कार्यक्षेत्र ।**	10
6	**गतिविधियां :** • वन अधिकार अधिनियम (एफआरए) • स्थायी कृषि व जैविक खेती को बढ़ावा • मृदा और जल प्रबंधन • प्राकृतिक संसाधन का प्रबंधन/पर्यावरण संरक्षण/स्वास्थ, स्वच्छता और कचरा प्रबंधन • स्थानीय कला का विकास/ग्रामीण अर्थव्यवस्था • सतत् आजीविका/स्थायी आजीविका • अहिंसा प्रोत्साहन/ग्रामीण पर्यटन • कौशल विकास प्रशिक्षण/आपदा प्रबंधन : कोविड–19 सहायता • एजुकेशन सपोर्ट, रिस्क सपोर्ट, बीज बैंक, एनपीएम, ग्रामसभा मोबलाईजेशन। • प्रभाव, भावी योजनाऐं • फोटो • न्यूज कवरेज • धन्यवाद्	11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24

Celebrating 20 years

दो शब्द

गांव के छोटे किसान, दलित तथा आदिवासियों के सामाजिक, आर्थिक, नैतिक तथा राजनीतिक विकास की दृष्टि से मानव जीवन विकास समिति नामक सामाजिक संस्था का वर्ष 2000 में गठन किया गया। विगत बीस वर्षों में संस्था ने अपने उद्धेश्यों को प्राप्त करने मे सराहनीय कार्य किया है। समाज में वंचितों तथा किसानों में आत्मविश्वास के साथ–साथ क्षमतावृद्धि भी हुई है। आम आदमी को हाशिये से निकालकर मुख्यधारा सें जोड़ने के लिए संस्था ने अनवरत प्रयास किया है। मध्यप्रदेश के महाकौशल, बुन्देलखण्ड और बघेलखण्ड के बैगा, गोंड़, कोल, जनजाति के लोगों ने तथा दलितों और किसानों ने संस्था के प्रशिक्षण केन्द्र से सामुदायिक नेतृत्व का प्रशिक्षण प्राप्त कर परम्परागत खेती के कौशल का विकास किया है।

निर्भय भाई के नेतृत्व में नौजवान कार्यकर्त्ता साथियों ने अथक परिश्रम किया है जिसके कारण संस्था अपनी स्थापना के समय से निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर हो रही है। संस्था के सम्मानित सदस्यों, तथा कटनी शहर के पत्रकार, बुद्धिजीवियों एवं समाजिक कार्यो से जुड़े लोगों ने अपने महत्वपूर्ण सुझावों तथा निर्देशों से संस्था को आगे बढ़ाने में भरपूर सहयोग दिया है जिसके लिए मैं उनका हृदय से धन्यवाद करता हूँ।

डॉ0 राजगोपाल पी0व्ही0
संस्थापक

Celebrating 20 years

आभार

समिति का रजिस्ट्रेशन होने के बाद अपने सीमित संसाधनों के साथ समिति अपने आसपास के गांवों मे जनजागरण व संगठनात्मक कार्य प्रारम्भ किया। परन्तु इस कार्यकाल के दौरान ग्रामीण विकास प्रतिष्ठान के सहयोग से सतना, डिण्डौरी काकेर जिले के 5–5 गांवों मे वैकल्पिक कृषि व नर्सरी वृक्षारोपण आदि कार्यो को बढ़ावा देने लायक काम करते–करते समिति ने अपने काम को कटनी जिले में केन्द्रित करते हुए वर्तमान में महाकौशल क्षेत्र को अपना कार्यक्षेत्र बनाया जिसमें वर्तमान में कटनी, दमोह, डिण्डौरी, मण्डला व बालाघाट जिले में सघन रुप से काम कर रही

है।

मुझे आज खुशी हो रही है कि समिति अपने इक्कीस वर्षों के कार्य को अंजाम देते हुए इस मुकाम में पहुंची है कि जो रिपोर्ट आपके हाथ में है उन सभी कार्यो में समिति से जुड़े एक–एक कार्यकर्ता समिति के सम्मानीय सदस्य गणों का भरपूर सहयोग रहा है। समिति को इस पड़ाव तक पहुंचाने में श्री राजगोपाल पी0व्ही0 (श्री राजा जी) का भरपूर आत्मीय आत्मबल प्रदान किया गया है जिनका मै हृदय से आभारी हूँ। समिति को बनाने के बाद उसके उद्धेश्यों के प्रति जो काम करना चाहता था काफी हद तक मै पीछे बीस वर्षो मे देखता हूँ तो आत्मशांति मिलती है। कई लोगों की रोजी रोटी खड़ी हुई, लोग जागृत होकर अपनी समस्याएँ हल करवाने लगे, मानव जीवन विकास समिति इस केन्द्र को दुनिया के कई देशों के व्यक्तियों तक अपनी पहचान बनाई है, इस समस्त विरादरी एवं टायपिंग व रिपोर्टिंग कार्य में राम किशोर चौधरी तथा हिसाब किताब कार्य में अभय कुमार पटेल और ट्रेनिंग सेंटर व कृषि कार्य मे लगे दयाशंकर यादव और प्रोजेक्ट प्रपोजल राईटिंग मे मदद् कर रहे चन्द्रपाल कुशवाहा तथा रसोई कार्य मे लगे महेन्द्र कुशवाहा को इसके अलावा अलग अलग प्रोजेक्टो मे काम कर रहे सभी कार्यकर्ता साथीगण का कोटी–कोटी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ ।

निर्भय सिंह
सचिव
मानव जीवन विकास समिति

मानव जीवन विकास समिति

परिचय :– मानव जीवन विकास समिति एक सामाजिक गैर–सरकारी संगठन है, जिसका गठन वर्ष 2000 में किया गया था। **विगत 21 वर्षो में संस्था ने अपने उद्धेश्यों के प्रति सजग रहते हुए सराहनीय कार्य किया है** और आगे निरन्तर ग्रामीण क्षेत्रों में काम कर रही है। समिति के ऑफिस स्टॉफ से लेकर फील्ड कार्यकर्ताओं की क्षमतावृद्धि के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में वंचित समुदाय के साथ उनके क्षमतावर्धन हेतु प्रशिक्षणों का आयोजन करना व लोगों की स्थायी आजीविका की ओर अग्रसर हो रही है, आम आदमी को मुख्यधारा में जोडने के लिये संस्था ने अनवरत् प्रयास किया है। **समिति शिक्षा, स्वास्थ, स्वच्छता, पर्यावरण सुरक्षा, सतत् आजीविका, स्थायी व जैविक कृषि, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, ग्रामीण पर्यटन, कौशल विकास प्रशिक्षण, अधिकार आदि** पर भी काम कर रही है। मध्यप्रदेश के महाकौशल, बुन्देलखण्ड, बघेलखण्ड, और केरल, राजस्थान क्षेत्र के **14 जिले के 26 ब्लॉक के 463 गॉवों में सघन** रूप से काम को बढा रही है, इसके अलावा **कोविड–19 के दौरान 33 जिले के 45 ब्लॉक के 1030 गांव** तक पहुंच बनी है। समिति के संस्थापक गॉधीवादी विचारक डॉ. राजगोपाल पी.व्ही. जी के निर्देशन में समिति निम्न दस स्तम्भों पर विचार–विमर्श कर अपने काम को आगे बढाने में निरन्तर सक्रिय है। समिति कटनी जिले के बड़वारा तहसील के अन्तर्गत बिजौरी गांव में अपने 30 एकड के क्षेत्र में प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना कर जड़ीबूटी संग्रह व संवर्धन, वृक्षारोपण व जैविक खेती को बढ़ावा देते हुए किसानों को प्रशिक्षण देने का भी कार्य कर रही है। समिति का मानना है कि वंचितों और किसानों के जीवन को बेहतर बनाने में सशक्त भूमिका निभाएगी जिससे भूखमुक्त और भयमुक्त समाज की रचना का सपना साकार होगा।

विजन (दृष्टि) – हमारी दृष्टि एक गरिमामयी जीवन जीने के प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन के लिए समुदाय की क्षमता को बढ़ाकर एक सामाजिक रूप से समावेशी समाज का निर्माण करना।

मिशन (लक्ष्य) – हमारा लक्ष्य जैविक खेती के माध्यम से एक वैकल्पिक आर्थिक मॉडल के रूप मे अहिंसक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना, प्राकृतिक संसाधनों के इष्टतम प्रबंधन के लिए गरीबी उन्मूलन और सामुदायिक आत्मनिर्भरता की ओर नेतृत्व करना।

ट्रेनिंग सेन्टर

संस्था के पास 30 एकड़ भूमि है। इसी भूमि पर संस्था का कार्यालय 2 कमरों पर है, 1 प्रशिक्षण व कान्फ्रेन्स हाल है जिसमे लगभग 200 लोगों को बैठाकर व 100 लोगों को कुर्सी मे बैठकर प्रशिक्षण दिया जा सकता है, 1 छोटा प्रशिक्षण हाल व 1 कान्फ्रेन्स हाल है, जिसमे 50 लोगों को कुर्सी मे बैठाकर प्रशिक्षण दिया सकता है। गेस्ट रूम है जिसमे 4 कमरे अटैच है, आवासीय भवन 3 बड़े हाल डोरमेट्री है जिसमे 100 लोगों को रूकाया जा सकता है एवं 5 छोटे कमरे जिसमे 50 लोगों को रूकाया जा सकता है, किचिन के बाजू से टीन शेड बना है जिसमे 100 से 150 लोगों को बैठाकर भोजन कराया जा सकता है तथा रसोई कक्ष भी है, स्टॉफ रूम तथा महिला रूम अलग से है, एक पुस्तकालय भी है जिसमे समाजिक कामों का विस्तृत जानकारी बुकलेट भी उपलब्ध है।

ट्रेनिंग सेंटर मे मानव जीवन विकास समिति एवं अन्य संस्थाओं के भी विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण आयोजित किये जाते है इसके अलावा क्रेडिट एक्सेस ग्रामीण लिमिटेड फाईनेंस कम्पनी को भी किराये से ट्रेनिंग सेंटर दिया गया है जिसमे महीने मे लगभग 15 से 20 दिन ट्रेनिंग होती है, इससे प्राप्त आय से ट्रेनिंग सेंटर एवं इसी कार्य मे लगे कार्यकर्ताओं को मदद मिलती है। ट्रेनिंग सेंटर शहर से दूर ग्रामीण क्षेत्र अन्तर्गत मझगवां (बरही रोड) एवं बिजौरी गांव के बीचों बीच अपना स्वयं का ट्रेनिंग सेंटर स्थापित कर संचालित है। शहर से दूर एवं यातायात व परिवहन के साधनों की आवाज दूर दूर तक सुनाई नही देती है इससे ध्वनि प्रदूषण का खतरा नही होता एवं व्यवस्थित ट्रेनिंग हो पाती है।

ट्रेनिंग सेंटर सर्वसुविधा युक्त संसाधनों से भरपूर है। इसके पास स्वयं का आवासीय परिसर उपलब्ध है, साथ ही सोलर बिजली 24 घण्टे उपलब्ध है, पानी की सुविधा है, ग्राऊण्ड है, पर्याप्त पेड़ पौधे होने से स्वच्छ वातावरण है, यातायात सुविधा हेतु सेंटर से 1.5 किलोमीटर मे नेशनल हाईवे एनएच–43 है जहां से कटनी, बरही व शहडोल रोड का कनेक्शन है, इसके अलावा 12 किलोमीटर मे कटनी जंक्शन है से जहां से भोपाल, रीवा, दमोह, सिंगरौली, बिलासपुर आदि रेलवे लाईन का कनेक्शन है, 100 किलोमीटर की दूरी मे जबलपुर (डुमना) हवाई अड्डा है जहां से दूरस्थ क्षेत्र मे आने जाने का साधन उपलब्ध है।

मानव जीवन विकास समिति का ट्रेनिंग सेंटर मे कई प्रकार के डिमास्ट्रेशन भी है जिसे देखने व समझने दूर दूर से लोग आते है। समिति के पास आवश्यकता अनुसार विषय विशेषज्ञ भी उपलब्ध रहते है जिससे प्रशिक्षण कराया जा सकता है।

Celebrating 20 years

समिति के 10 स्तम्भ

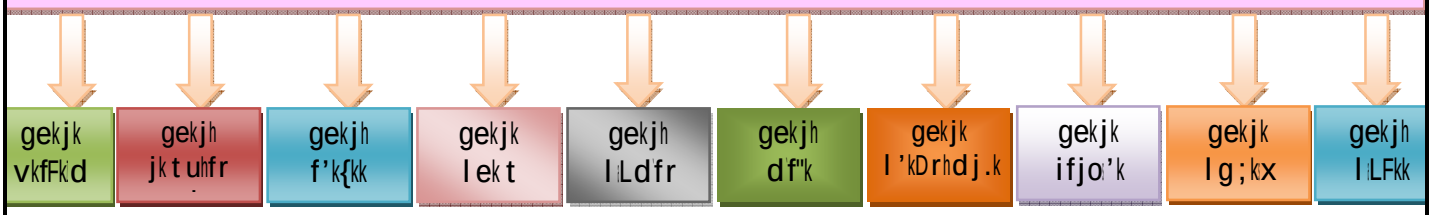

- **हमारा आर्थिक–** परावलम्बी समाज से स्वावलम्बी समाज निर्माण के सिद्धान्त पर चलते हुए प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन पर आधारित अहिंसक समाज रचना में लगे समुदाय का निर्माण करना ताकि भूखमुक्त समाज की रचना हो सके।
- **हमारी राजनीतिक** – लोक आधारित लोक उम्मीदबार के सिद्धान्त पर लोकनीति के अनुसार चलने के लिए लोगों को खड़ा करना ताकि सही अर्थो में लोकतंत्र की स्थापना की जा सके।
- **हमारी शिक्षा** – समग्र विकास पर आधारित ज्ञान का प्रचार प्रसार एवं स्कूली बच्चों के सर्वांगीण विकास के साथ–साथ रोजगारोन्मुखी शिक्षा देना ताकि बेरोजगारी की समस्या का उन्हे सामना न करना पड़े।
- **हमारा समाज**– अखण्डता, सम्प्रभुता, सम्भाव, परस्पर भाईचाारे के साथ–साथ एकता, समानता, सामूहिकता एवं न्याय पर आधारित समाज जिसमें ऊंच–नीच, अगले–पिछड़े जाति आधारित भेदभाव न हो।
- **हमारी संस्कृति** – स्थानीय लोक कला एवं संस्कृति के कलाकारों को संगठित कर पुनर्जीवित करना उनका संवर्धन एवं संरक्षण कर वातावरण उपलब्ध करवाना।
- **हमारी कृषि**– लम्बे समय तक भूमि की उत्पादन क्षमता बनाये रखने वाली जैविक खेती को प्रोत्साहन देकर पारम्परिक ढ़ग से खेती कर रहे किसानों का उत्साह बढ़ाना ताकि वे कृषि की नीति का विकास कर सके।
- **हमारा सशक्तीकरण** – गरीबी झेल रहे दीन दुःखी जो अपाहिजों जैसा जीवन जीने के लिऐ विवश हैं। समाज में विद्यमान ऐसे स्त्री पुरूषों के प्रति असमानता और उपेक्षा को दूर कर समानता का दर्जा दिलवा कर शोषण, अत्याचार एवं भ्रष्टाचार से मुक्त सशक्त सामाजिक ढ़ांचे का निर्माण करना।
- **हमारा परिवेश** – स्वच्छ व स्वस्थ वातावरण का निर्माण करना जहाँ हिंसा, लूटपाट, वैमनस्यता, दुराचार तथा तेरे मेरे लिए कोई स्थान न हो।
- **हमारा सहयोग एवं मित्रता** – परस्पर सहयोग की भावना को पुनर्जीवित कर एक दूसरे की सहायता व मित्रता को बढ़ावा देना ताकि पूरा गांव और समाज अपनी समस्याऐं आपसी सहयोग व मित्रता के आधार पर सुलझा सकें।
- **हमारी संस्था** – उपरोक्त विचारों के क्रियान्वयन के लिऐ तथा समाज कल्याण के काम का विकास करने में संस्था एक मजबूत आधार स्तम्भ है।

समिति का उद्धेश्य है

- जैविक कृषि और गैर कीटनासी प्रबंधन व सम्बर्द्धन को बढ़ावा देना।
- जल व मृदा संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण के कार्य करना।
- ग्रामीण आधारित आजीविका प्रोत्साहन।
- पारंपरिक बीज संरक्षण को बढ़ावा देना।
- पशु प्रबंधन को बढ़ावा देना।
- ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देना।
- महिलाओं को उनके अधिकार के प्रति जागरूक करना।
- महिलाओं को सम्मान तथा अधिकार दिलाने के लिए शिक्षा, ज्ञान विज्ञान का प्रचार–प्रसार करना।
- विज्ञान, शिक्षा, साहित्य तथा ललित कलाओं का विकास करना।
- वन अधिकार अधिनियम (एफआरए) पर समुदाय को जागरूक करना।
- वनवासियों की आजीविका, समृद्धि एवं सम्मान की रक्षा के लिए प्रयास करना।
- वनवासियों को वन/वनोपज पर उचित अधिकार दिलवाना एवं संघर्ष कर रचनात्मक कार्य करना।
- पर्यावरण को स्वस्थ एवं प्रदूषण मुक्त करने के प्रयासों को बढ़ावा देना।
- बाल संरक्षण को बढ़ावा देना और शिक्षा की गुणवत्ता मे सुधार करना।
- बच्चों के सर्वांगीण विकास के अनुरूप परिवेश की रचना के लिए प्रयास करना।
- सामाजिक कल्याण तथा अन्याय एवं शोषण के विरूद्ध लोक चेतना जागृत करना।
- जागरूकता और सरकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त करने के लिए समुदाय को मदद करना।
- जैविक कृषि पद्धति का क्षेत्र मे प्रचार–प्रसार करना ताकि कृषि उत्पादकता मे वृद्धि हो।
- खेती को लाभ का धन्धा बनाने के लिए जैविक तरीके को अपनाना व वृक्षारोपण को बढ़ावा देना।
- विस्थापितों को न्यायपूर्ण अधिकार दिलाने के लिए शान्ति और अहिंसा के मार्ग को प्रशस्त करना।

कार्यक्रमों की उम्मीदें

विभिन्न कार्यक्रमों से उम्मीद जागती है :

- पर्यावरण सुरक्षा एवं किसानों को जैविक खेती करने बढ़ावा देना।
- हिंसा मुक्त समाज का निर्माण तथा नशामुक्ति के खिलाफ माहौल निर्माण।
- शासकीय योजनाओं की जानकारी व क्रियान्वयन एवं युवाओं मे जागरूकता।
- शिक्षा स्तर तथा स्वावलम्बन प्रक्रिया मे बढ़ावा एवं आदिवासी क्षेत्रों मे जागरण का संकेत।
- जल स्तर मे बढ़ावा एवं सुधार हेतु तालाब, डेम, चैक डेम व छोटे छोटे कन्टूर का निर्माण।
- गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों को बढ़ावा मिलेगा तथा स्वरोजगार स्थापित होंगे, पलायन रूकेगा।
- जल, जंगल और जमीन सुरक्षित होगी तथा लोगों की स्थायी आजीविका का मॉडल निर्माण।
- पंचायतीराज की समझ का विकास तथा महिलाओं मे सशक्तिकरण व क्षमतावर्द्धन का विकास।

रणनीति

उद्धेश्यों की पूर्ति करने मे निम्न रणनीति का उपयोग हो रहा है :

- मूलभूत सुविधाओं जैसे पेय जल, आवास, बिजली, शिक्षा पर बल देना।
- एफ.आर.ए. के तहत लोगों को वन भूमि मे काबिजों का अधिकार पत्र व कब्जा दिलाना।
- सामाजिक कुरीतियों को समझाने लोकगीत, नाटक प्रदर्शन आदि के माध्यमों से समझाना।
- पंचायत जनप्रतिनिधियों व जागरूक मंच का अधिकारों के प्रति निरन्तर क्षमतावर्द्धन करना।
- मीडिया व अधिकारियों के साथ संवाद करना ताकि जानकारी का अदान–प्रदान होता रहे।
- जन जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन, बैठक व छोटे छोटे नुक्कड़ सभाऐं आयोजित करना।
- कार्यकर्ताओं द्वारा गांव गांव मे संगठन एवं स्वसहायता समूहों का निर्माण करना एवं संचालन।
- योजनाओं का विकेन्द्रीकरण मे मदद एवं शासकीय विभागों से तालमेल बैठाना व काम कराना।
- स्कूलों मे वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कर बच्चों मे शिक्षा के प्रति जागरूकता लाना।

भौगोलिक कार्यक्षेत्र

मध्यप्रदेश	1 कटनी	2 जबलपुर	3 पन्ना	4 छतरपुर	5 उमरिया	6 सीधी	7 शहडोल
	8 जयसिंह नगर	9 डिण्डौरी	10 मण्डला	11 बालाघाट	12 दमोह	13 सिहोर	14 सतना
	15 रीवा	16 धार	17 सागर	18 सिवनी	19 टीकमगढ़	20 राजगढ़	21 विदिशा
केरल	22 कानपुर	23 कोजीकोड	24 वायनाड	25 अलप्पुझा			
राजस्थान	26 जोधपुर	27 उदयपुर	28 जयपुर				

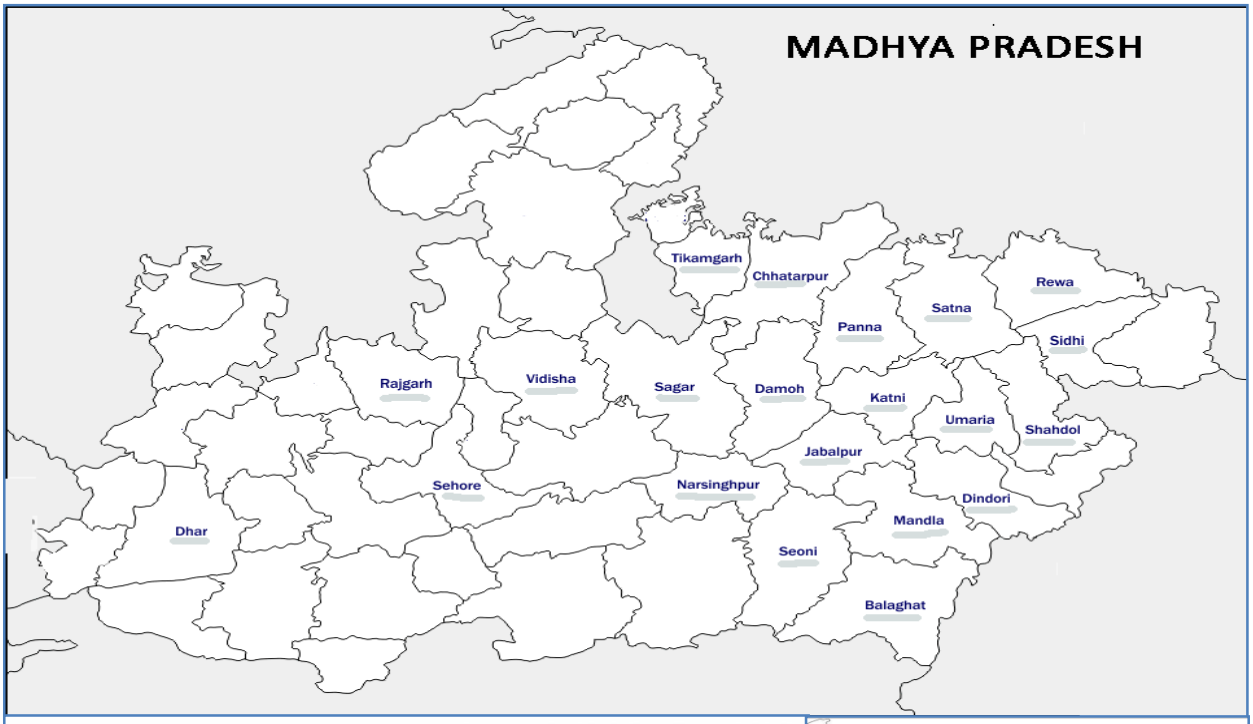

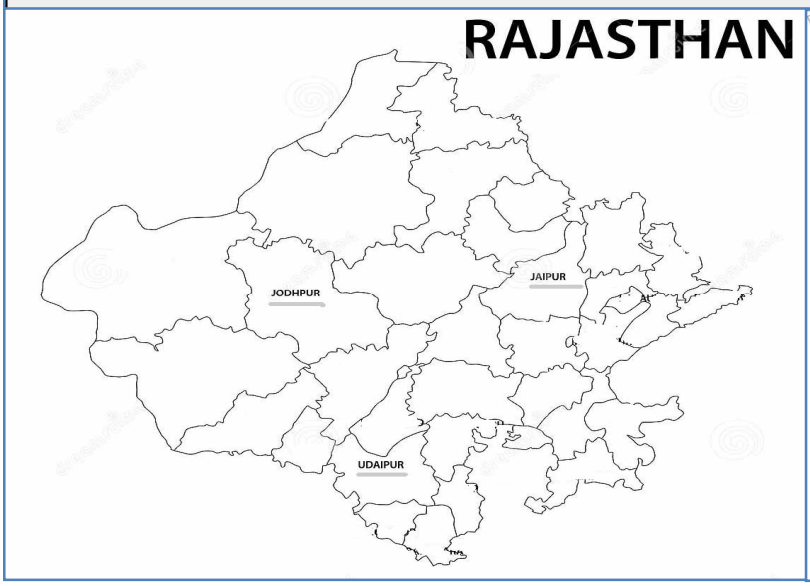

Celebrating 20 years

गतिविधियां –2

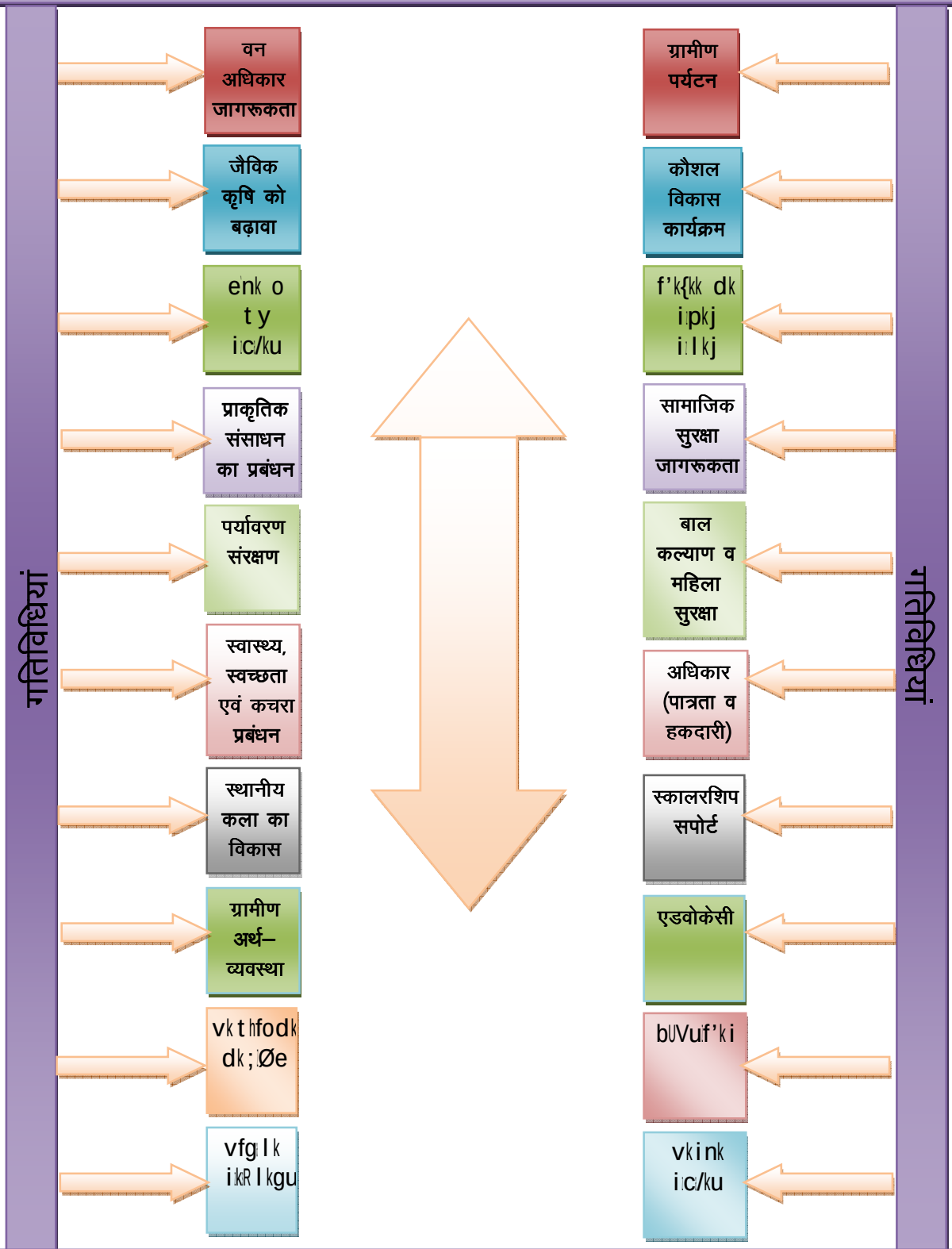

वन अधिकार अधिनियम (एफ.आर.ए.) : वन अधिकार कानून 2006 के प्रति लोगों को बैठक व शिविर के माध्यम से जागरूक किया गया ताकि वन क्षेत्र मे काबिज हितग्राहियों को पट्टा प्राप्त हो सके। वन अधिकार कानून 2006 के तहत लोगों के काबिज भूमि का वन एप मित्र के माध्यम से लोगों के आवेदन भरवाये गये ताकि पात्र हितग्राही को हकदारी मिल सके। वन अधिकार के तहत वन एप मित्र से प्राप्त आवेदनों के माध्यम से लोगों को काबिज भूमि का पट्टा मिला है। इस कानून के तहत अधिक से अधिक लोगों के दावा आपत्ति के फार्म भरवाये गये है, इसके बाद सम्बंधित पटवारी, आरआई व तहसीलदार से संवाद व पत्राचार भी कराया गया है जिसके माध्यम से आवेदनों की छानबीन कर वास्तविक पात्र हितग्राही को काबिज भूमि का पट्टा व अधिकार पत्र दिलाया गया है।

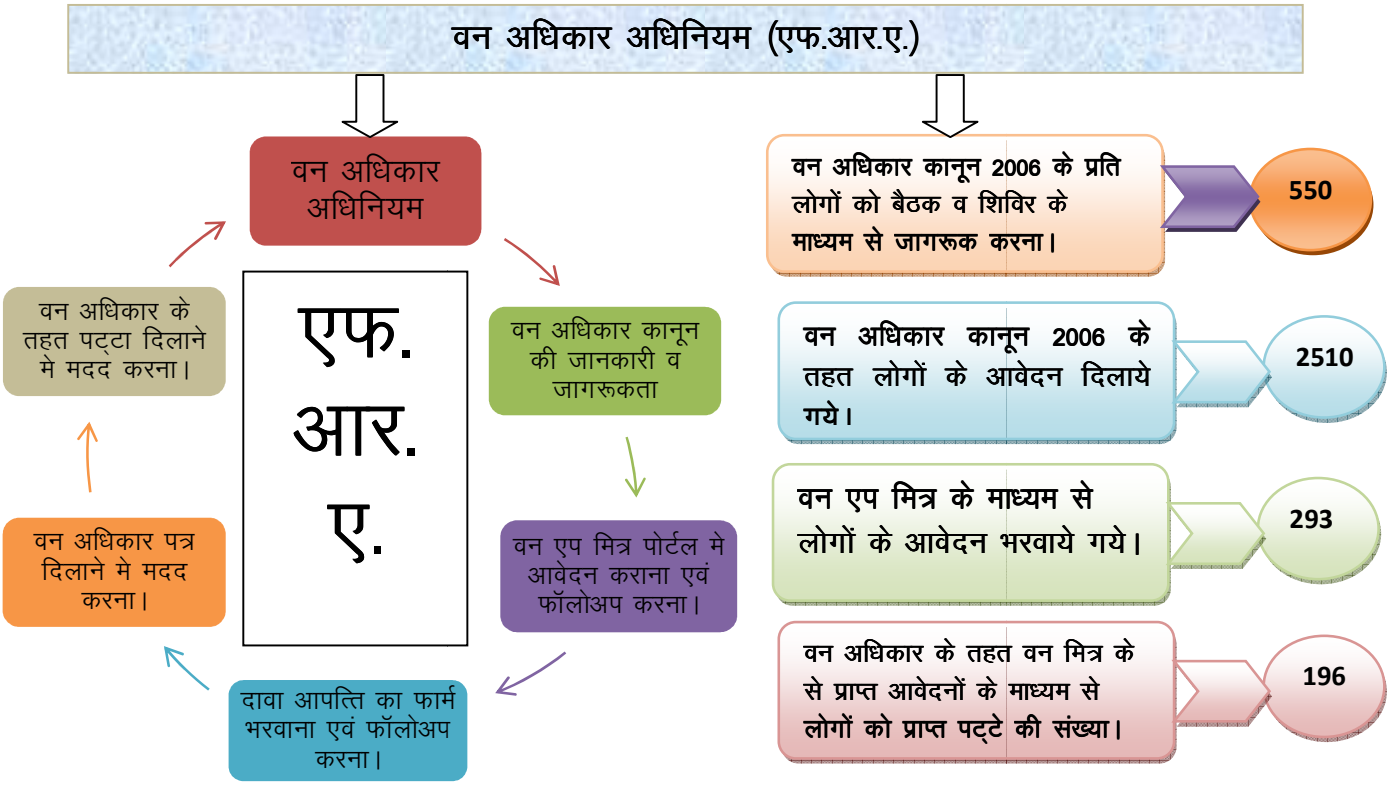

स्थायी कृषि व जैविक खेतीः

सभी को जैविक तरीके की खेती को अपनाना होगा इस परिपेक्ष्य मे किसानों को जागरूक किया गया है। समिति अपने तरीके से कार्यक्षेत्र के गांव मे कार्यकर्ताओं की मदद से किसानो को जैविक खेती करने प्रोत्साहित कर रही है। खेती मे गोबर खाद, केचुआ खाद, कम्पोस्ट खाद, वर्मीकम्पोस्ट खाद के अलावा कीटनाशक की जगह गौ–मूत्र, नीम अस्त्र, घन जीवामृत, बीजामृत, मटका खाद, पंचगब्य का उपयोग करना बताते और सिखाते है। पौधो को पोषक तत्व प्रदान करने के लिए अलग अलग फसलों के लिए अलग अलग पोषक तत्व की आवश्यकता होती है जिसे जैविक तरीके से निर्माण कर किसान उपयोग कर रहे है जैसे राइजोबियम, ऐजेक्टोबेक्टर, ट्राइकोडरमा का उपयोग करते है। जैविक कीट नियंत्रण मे अग्नयास्त्र, नीमास्त्र, तुलास्त्र, हींगास्त्र, लमित, मठास्त्र आदि का प्रयोग कर जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे उत्पादकता मे लगातार वृद्धि हो रही है। जैविक खेती करने वालों की संख्या बढ़ रही है।

जैविक खेती को बढ़ावा देना

जैविक खाद प्रबंधन– गोबर खाद, केचुआ खाद, कम्पोस्ट खाद, वर्मीकम्पोस्ट खाद, नाडेप व भू–नाडेप खाद, मटका खाद। जैविक खाद का उपयोग रासायनिक खाद की अपेक्षा बेहतर होता है। इसमे लागत भी कम लगती है और जैविक खाद स्वयं भी बनाया जा सकता है। रासायनिक खाद मंहगा तो होता है इसके साथ नुकसानदायक भी है इसके उपयोग से उत्पादित अनाज का सेवन करने से मानव शरीर मे कई गम्भीर बीमारियां पनपती है। बीमारियों को रोकने के लिए जैविक खाद प्रबंधन के साथ जैविक खेती को अपनाया है।

कीटनाशक प्रबंधन– 1. कीटनाशक दवाईयां– गौ–मूत्र, नीम अस्त्र, अग्नास्त्र, तुलास्त्र, हींगास्त्र, मठास्त्र, दसपर्णी।

2. पोषक तत्व – घन जीवामृत, बीजामृत, पंचगब्य, अजोला।

di-	xfrfof/k;k	miyfC/k;k	di-	xfrfof/k;k	miyfC/k;k
1	गैर कीटनाषक प्रबंधन (NPM) प्रणाली से खेती करने वाले कुल किसान।	22000	8	बीज बैंक की स्थापना	40
2	मिट्टी परीक्षण कराकर कार्ड तैयार कराना	1543	9	वर्मीकम्पोस्ट निर्माण	780
3	श्री विधी से धान कि खेती को बढ़ावा देना	1625	10	नाडेप, भू–नाडेप निर्माण	4021
4	किचिन गार्डन को बढ़ावा देना	5070	11	सूचना केन्द्र की स्थापना	46
5	हल्दी, धनियां एवं मिर्ची कि खेती को बढ़ावा देना	927	12	जैव उत्पाद इकाई कि स्थापना	4
6	तुअर कि खेती को बढावा देना	1200	13	बाड़ लगवाना	546
7	कोदो एवं कुटकी कि खेती का बढ़ावा देना	568	14	अजोला को बढ़ावा देना	682

मृदा और जल प्रबंधन :

भूमि प्रबंधन और जल प्रबंधन बहुत जरूरी है इसके बिना खेती संभव नही है। कृषि योग्य भूमि मे जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। वर्तमान मे देखा जाये तो अधिकांश मात्रा मे भूमि का दोहन हो रहा है, भूमि पर से पेड़ो को लगाने की बजाय काटा जा रहा है। पेड़ कटने से बारिस का पानी तेजी से गिरने के कारण मिट्टी का कटाव ज्यादा होता है जिससे भूमि की उर्वरता नष्ट होती है। बारिस का पानी रोकने के लिए मेढ़बंदी, तालाब, डेम, चैक डेम, कंटूर निर्माण, वृक्षरोपण कराकर मिट्टी के कटाव को रोका जा रहा है। समिति अपने कार्यकर्ताओं की मदद से फील्ड मे गांव गांव जाकर किसानों के भूमि मे बरसात के मौसम मे अधिक से अधिक वृक्षारोपण करा रही है।

मृदा और जल प्रबंधन

क्रं.	गतिविधियां	संरचनाओ कि संख्या	लाभान्वितो कि संख्या	क्षेत्रफल एकड़ में
1	चैकडेम, स्टापडेम निर्माण	16	320	320
2	सामुदायिक तालाब	11	1100	2500
3	खेत तालाब निर्माण	65	65	65
4	मेड़ बंधान एवं भूमि समतलीकरण	889	889	889
5	कुंआ निर्माण	79	79	79
6	बोरी बंधान	168	840	840
7	प्लान्टेशन	1680 परिवार	1680	380

Celebrating 20 years

प्राकृतिक संसाधन का प्रबंधनः- वे संसाधन जो उ□योगी हो या फिर मनुष्य को अ□नी जरूरतों को □ूरी करने हेतु उ□योगी बनाये जा सकते हैं। संसाधन के □रोक्ष रू□ से उ□योग करने हेतु, उ□लब्ध हो, प्राकृतिक संसाधन हैं। प्राकृतिक संसाधनों के उदाहरण, शुद्ध हवा, शुद्ध □ानी, मृदा, वन, खनिज, वर्षा, झीलों, नदियों और कुओं द्वारा मृदा, भूमि, वन, जव□विविधता, खनिज, जीवाश्मीय ईंधन इत्यादि शामिल हैं। इस प्रकार प्राकृतिक संसाधन हमें □र्यावरण से प्राप्त होते हैं। बढ़ती जनसंख्या और आर्थिक प्रक्रियाओं के चलते अत्यधिक मात्रा में □दार्थों का उ□योग करने के कारण प्राकृतिक संसाधनों के आधार □र भारी बोझ □ड़ता ह□और इस कारण □र्यावरण गंभीर रू□ से नष्ट होता जा रहा ह□ प्राकृतिक संसाधन को बनाये रखने के लिए समिति व संगठनकर्ता पर्यावरण के अवसर पर अधिकांश मात्रा मे वृक्षारोपण करते है, वर्षा का जल बेकार न बह जाये इसके लिए छोटे छोटे जल संरचनायें बनाये जा रहे है, जनसंख्या नियंत्रण पर रोक लगाने लोगों को जागरूक किया जा रहा है। लगभग 10000 पौधे का रोपण कर प्राकृतिक संसाधन को सुरक्षित करने का संदेश दिया है।

□र्यावरण संरक्षण एवं संवर्धनः- □र्यावरण के संरक्षण, संवर्धन और विकास का लिया संकल्□, □र्यावरण संरक्षण के लिए हमें सर्वप्रथम इस धरती को प्रदूषण रहित करना होगा। जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रदूषण भी बढ़ता ही जा रहा ह□ जिसे नियंत्रण में लाना आवश्यक ह□ तभी हमारे □र्यावरण का संरक्षण हो □ाएगा। मनुष्य दिन प्रतिदिन प्रगति करता जा रहा ह□ और इस विकास के नाम □र प्रदूषण वृद्धि करता जा रहा ह□ □र्यावरण अर्थात् जिस वातावरण में हम रहते हैं। हमारे आस □ास मौजूद हर एक चीज, जीव.जंतु, □क्षी, □ड़.□ौधे, व्यक्ति इत्यादि सभी से मिलकर □र्यावरण की रचना होती ह□ हमारा इस □र्यावरण से घनिष्ठ संबंध ह□ और हमेशा रहेगा। प्रकृति और □र्यावरण की अद्भुत सुंदरता देखते ही हृदय में खुशी और उत्साह का संचार होने लगता ह□ पर्यावरण को शुद्ध बनाये रखने के लिए लोगों को निःशुल्क पौधे वितरण कर घर के आसपास, खेतों व सार्वजनिक जगहों मे पौधा लगवाया जा रहा है। पौधा रोपण का महत्व जन जन तक पहुंचाया गया जिससे प्रभावित होकर अधिक अधिक से संख्या मे पौधा रोपण हुआ।

स्वास्थ्य, स्वच्छता व कचरा प्रबंधन :– स्वास्थ्य के क्षेत्र मे देखा जाये तो गांव गांव मे समिति कार्यकर्ता आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, सहायिका, आशा कार्यकर्ता, महिला जनप्रतिनिधियों की मदद से कुपोषित बच्चे को पोषण पुनर्वास केन्द्र मे भर्ती कराना और पोषण आहार दिलाना, किशोरी बालिका की समय समय पर जांच व आवश्यक सलाह दी जाती है, गर्भवती व धात्री महिलाओं की जांच व उपचार कराने सलाह दी जाती है एवं गंभीर बीमार व्यक्ति की ईलाज कराने, काम कर रही है। गाँधी जी के दैनिक जीवन में सफाई अति आवश्यक कार्य था, उन्हीं आदर्शो का पालन करते हुए संस्था स्वच्छता एवं कचरा प्रबंधन को प्राथमिकता से काम किया है। गांव की गलियो, वार्डो मे साफ सफाई कर स्वच्छता का परिचय दिया जा रहा है। कचरा इकट्ठे करने एवं कचरे से फायदे व हानि को भी बताया गया। हमारे आसपास अन्यत्र जगह कचरा जमा होने से गंदगी के कारण जहरीले मच्छर पनपते है जिसके काटने से बीमारी होती है, इससे बचने के लिए कचरा को एक निश्चित जगह **कम्पोस्ट व वर्मीकम्पोस्ट और नाडेप व भू–नाडेप** मे डालने से कचरा से खाद बनती है जिसके उपयोग से खेती मे अनाज की पैदावार को बढ़ा सकते है।

स्थानीय कला का विकास:- स्थानीय कला वास्तव मे विलुप्त होता चला जा रहा है ऐसे मे आने वाले समय मे स्थानीय कला का नामों निशान मिट जायेगा। समिति अपने स्तर पर स्थानीय कलां को बचाये रखने मे मदद कर रही है। जैसे मिट्टी के बर्तन बनाना, बांस के बर्तन बनाना, पत्थर की वस्तु बनाना, लकड़ी की वस्तु बनाना आदि शामिल है। ऐसे कलाकारों को समिति के माध्यम से प्रतिभाशाली कलाकारों का ट्रेनिंग दिया जाता है इनके द्वारा उत्पादित वस्तु का बाजार उपलब्ध कराकर उचित पारिश्रमिक दिलाये जाने कार्य किया जा रहा है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था (रूरल इकोनॉमी):–प्रदेश व प्रदेश के बाहर जहॉ भी लोग अपने गॉव की अर्थव्यवस्था को ठीक करना चाहते हैं या आगे बढ़ाना चाहते हैं तो उस गॉव में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन, पानी, जमीन और वनोपज का संकलन जैसे कार्यों को प्राथमिकता के साथ करना चाहते हैं उन गॉवों के साथ सामूहिक रूप से बैठकर संगठन के माध्यम से ऐसे कार्यक्रमों को आगे बढाने के लिये कार्यक्रम तय किये जाते हैं जैसे उमरिया जिले का मरई कला, कटनी जिले का कछारी गांव मे कई प्रकार के ग्रामीाण अर्थव्यवस्था के तहत काम किये जा रहे हैं, जिसमें जैविक खेती को बढाना, महिलाओं के द्वारा सब्जी उत्पादन को बढाना वनोपज का संकलन एवं मार्केटिंग, सिंचाई सुविधा के साथ खेती में उत्पादन बढाकर अपने भरण पोषण के लिये अनाज उत्पादन करना।

कटनी जिला अन्तर्गत बड़वारा ब्लॉक का कछारी गांव मे 15 महिलाओं का समूह बना है ये समूह काफी सक्रिय है यह जैविक सब्जी उत्पादन के लिए जाना जाता है। **जैविक सब्जी** का उत्पादन के आधार पर बाजार की उपलब्धता नही होने से उमरिया जिले का बाजार करते है वहां से लगा हुआ कालरी इलाका होने से सब्जी का भाव अच्छा मिल जाता है जिससे अपने लोकल बाजार से **30 से 35 प्रतिशत** अधिक लाभ हो रहा है। प्रतिवर्ष समूह **3.50 से 4 लाख रूपये** तक सब्जी व्यवसाय से कमाता है। व्यवसाय से प्राप्त आमदनी का कुछ हिस्सा अन्य खेती मे लगाकर आर्थिक स्थिति को मजबूत कर रहे है। कछारी गांव आस पास के गांव के लिए जैविक सब्जी खेती के लिए उदाहरण स्वरूप साबित हुआ है, दूसरे गांव के लोग इसे देखने आते है।

उमरिया जिला अन्तर्गत मानपुर ब्लॉक का मरईकला गांव बाधवगढ़ टाईगर रिजर्व रिसोर्ट से लगा हुआ गांव है। इसके आसपास नदि, नाले होने से पानी का अच्छा स्त्रोत है, यहां की जमीन भी काली, भुरभुरी वाली होने से सभी फसलों के लिए अच्छा उत्पादन देती है। जैविक खाद गोबर, कम्पोस्ट व वर्मीकम्पोस्ट खाद का उपयोग कर जैविक हल्दी का उत्पादन मे वृद्धि के साथ साथ उसकी गुणवत्ता भी अच्छी होती है **जैविक अदरक व हल्दी** होने के कारण बाजार भाव अच्छा मिलता है इससे किसानों के उत्पादकता मे वृद्धि हुई है। प्रत्येक किसान **60 से 70 हजार रूपये** तक हल्दी से कमाता है। गांव के अन्य किसान भी जैविक हल्दी खेती की ओर अपना रास्ता बदल रहे है। रूरल टरिज्म को बढावा मिल रहा है।

सतत् आजीविका/स्थायी आजीविका कार्यक्रम :– मानव जीवन विकास समिति द्वारा **भारत रूरल लाईवलीहुड फाउण्डेशन** दिल्ली की मदद से दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा ब्लॉक मे एवं **एसीसी सीएसआर परियोजना** अन्तर्गत कटनी जिले के विजयराघवगढ़ ब्लॉक मे और **व्यक्तिगत समर्थकों** के सहयोग से आजीविका कार्यक्रम समिति अपने कार्यकर्ता टीम की मदद से संचालित कर रही है। यह कार्यक्रम से लोगों को जोड़कर काम करना होगा ताकि लोगों की मदद से लोगों के लिए काम किया जा सके। साथ लोगों की स्थायी आजीविका सुनिश्चित किया जा सके। गांव के लोगों के पास पुस्तैनी खेती किसानी की जमीन बहुत कम थी जिससे चलते खेती से प्राप्त आमदनी से ही परिवार का भरण पोषण ठीक से चल सके संभव नही था। इसके लिए लोगों को वनभूमि पर जो कब्जा कर रखा है उसी भूमि मे खेती को बढ़ावा दिया जाना होगा। गांव के लोगों को बताया गया की जो आपने वनभूमि को काबिज कर रखा है उसका मालिकाना हक व पट्टा सरकार **वन अधिकार अधिनियम 2006** के तहत दाबा आपत्ति फार्म भरने पर प्रमाणित होने पर पट्टा दे रही है। फिर आप उस भूमि पर अच्छी खेती कर आमदनी कमा सकते है, इसके बाद वन अधिकार अधिनियम से प्राप्त खेती की जमीनों को विकसित करना और बाकी लोगों को वन अधिकार अधिनियम के तहत दावा लगवाकर पट्टा दिलाना और उस जमीन को खेती योग्य शासकीय योजनाओं की मदद से तैयार करना। परियोजना मे मुख्य रूप से **जैविक खेती** को बढ़ावा देना, पानी संरक्षण के काम, शासकीय योजनाओं तक लोगों की 100 प्रतिशत पहुंच बन सके इसके लिए काम कर रहे है।
अधिकांश लोगों को स्व–रोजगार से जोड़ने का लगातार प्रयास संस्था कर रही है जैसे मुर्गीपालन, बकरीपालन, मछलीपालन, हस्तकला शिल्प, वनोपज संग्रहण कर अपनी आजीविका सुनिश्चत करना।

क्रं.	गतिविधियां	उपलब्धिां (परिवार सं.)
1	व्यवसायिक स्तर पर सब्जियो कि खेती को बढ़ावा देना	1320
2	मुर्गी पालन	350
3	बकरी पालन	103
4	मछली पालन	45
5	हस्तकला शिल्प	340
6	वनोपज संग्रहण	1420

अहिंसा प्रोत्साहन (गो–रूर्रबन कैम्प):– मानव जीवन विकास समिति अपने उद्देश्यों के अनुरूप समाज व देश में अहिंसा को बढावा देने के लिए कई प्रकार की गतिविधियां संचालित करती हैं, जिसके अंतर्गत युवाओं में अहिंसा की शिक्षा के सैद्वांतिक और व्यावहारिक समझ विकसित किया जाता है। इसके लिए शहरी व ग्रामीण युवाओं का गोरूरवन कैम्प आयोजित किया जाता है जिससे दोनों मिलकर एक दूसरे के परिवेश को समझेंगे और विकास की रणनीति बनायेंगे। इस प्रकार से साल मे 4–5 कैम्प लगाये जाते है जिससे युवा अपनी स्वेच्छा से भाग लेता है और गतिविधि मे मदद् करता है। ये ग्रुप गांव के लोगों को जागरूक करने का काम करती है जिससे आगे आकर विकास का हिस्सा बने। गांधीवादी विचारधारा को अपनाने व उनके बताये मार्ग पर चलने के लिए लोगों को अधिकांशतः प्रोत्साहित किया जा रहा है। यह की आगे आने वाले समय मे विकास का मार्ग प्रसस्त होगा। शैक्षणिक संस्थानों मे अहिंसात्मक शिक्षा को प्रोत्साहन व बढ़ावा मिलेगा। इस कैम्प के माध्यम से अहिंसा की शिक्षा दी जाती है, इससे एकता, समानता, सामूहिकता, सौह्रार्द की भावना का विकास होता है। सामाजिक कार्य मे लगे समाजसेवी गोरूरबन कैम्प मे भाग लेकर अपने आप को दक्ष बनाते है। इस वर्ष के कैम्प मे 18 प्रतिभागी ज़ुडकर शिविर को समझा जाना है।

ग्रामीण पर्यटन:– रूरल टूरिज्म प्रोग्राम मानव जीवन विकास समिति ने फ्रान्स की संस्था तमादी के साथ मिलकर रूरल टूरिज्म (ग्रामीण पर्यटन) की अवधारणा के अनुसार एक सामाजिक और सांस्कृतिक अदान–प्रदान की गतिविधियों का संचालन कर रही है। भारत में हमने तीन तरह के सर्किट बनाकर रखे हैं और तमादी के साथ मिलकर आगे बढाते हैं जिसमें 15 दिन, 17 दिन एवं 25 दिन शमिल है। 15 दिन में दिल्ली से जयपुर , अलवर, उदयपुर, आगरा, से दिल्ली वापसी तथा 17 दिन में दिल्ली से कटनी या भोपाल, उमरिया, सिहोर, बोरी, सांची, आगरा से दिल्ली वापसी। 25 दिन वाले में कटनी, उमरिया, भोपाल, सिहोर जयपुर, उदयपुर, जोधपुर ओर्छा खजुराहो से वापसी दिल्ली होते हुए अपने देश को रवाना हो जाते है।

गांव के समूह कल्चरर एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत तमादी द्वारा भेजे जा रहे मेहमानों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था में सहयोग करते है। और जो पैसा लॉज व होटल मे रूकने पर खर्च होता था वह पैसा गांव के समूह को ही दिया जाता है जिससे समूह से जुड़े लोगो की आर्थिक स्थिति म सुधार हुआ है। गांव मे ही लोगों के बीच रहते है लोकल कल्चर को देखते व सीखते है। विदेशी ग्रुप का गांव मे आने जाने से गांव के समूह का भी सुधार हुआ है। गांव मे लोगों का समूह अच्छा मजबूत है, समूह मे काम करना लोगों को अच्छा भी लगता है। यहां के आदिवासी लोगों का लोकल सांस्कृतिक कल्चर काफी प्रसिद्ध है जिसे दूर दूर से लोग देखने आते है काफी देखने व सीखने योग्य है।

ग्रामीण पर्यटन विकास को बढ़ावा देने के लिए मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड के सहयोग से कटनी, उमरिया, दमोह, बुधनी जिले के 6 गांवों को ग्रामीण पर्यटन के रूप मे विकसित करने का कार्य समिति कर रही है।

प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रम :

कं.	गतिविधियां	उपलब्धियां
1	कुल स्वयं सहायता समुह	350
2	कुल ग्राम विकास संगठन	78
3	किसान उत्पादक संगठन	3000
4	अलग अलग विषयो पर SHG का क्षमता निर्माण कार्यशाला	126
5	अलग अलग विषयो पर ग्राम विकास संगठनो का क्षमता निर्माण कार्यशाला	78
6	अलग अलग विषयो पर किसानो का प्रशिक्षण	560
7	किसानो का एक्सपोजर	12
8	कृषि विभाग, उद्यान विभाग, कुषि विज्ञान केन्द्र, जवाहरलाल कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर एवं पशुपालन विभागो के द्वारा MJVS के कार्यक्षेत्रो में भ्रमण।	24
9	सरकारी योजनाओ पर जागरूकता अभियान	72
10	सरकारी विभागो के साथ आमुखीकरण कार्यशाला	38
11	बकरी, मुर्गी एवं मछली पालन पर प्रशिक्षण	25

Covid-19 (कोरोना) महामारी व्यापक रूप से पूरी दुनिया मे फैल रही है जिसके मद्देनजर रखते हुए पूरे देश मे लॉकडाउन किया गया। इस महामारी के चलते लॉकडाउन के कारण संक्रमित लोगों व मरीजों की संख्या मे कमी तो आई है लेकिन वही दूसरी तरफ देखा जाये तो पलायन किये मजदूर दूसरे राज्यों मे कम्पनियो व फैक्ट्रियों मे जहां काम कर रहे थे वही के वही रह गये। यातायात साधन की व्यवस्था न होने से मजदूर जहां काम कर रहे थे वही फंसे रह गये। दूसरा गांव घर मे रह रहे दिहाड़ी मजदूरी कर रहे लोगों का भी जीवन दूभर हो गया। इस परिस्थिति मे प्रशासन और विभिन्न सामाजिक संगठन व संस्थाऐं अपने अपने स्तर पर लोगों की मदद् कर रहे है। मानव जीवन विकास समिति एक गैर सरकारी संगठन है। जो मध्यप्रदेश के सदूर ग्रामीण अंचलों मे लोगों की आजीविका के विषय पर काम कर रही है। समिति अपने स्तर पर कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाकर कार्य को अंजाम दे रही है। कोरोना प्रभावितों को सुरक्षा व बचाव हेतु राशन किट, स्वच्छता किट, पोषण किट आदि का वितरण कर सहायता पहुंचाई गई।

कोरोना की दूसरी व तीसरी लहर मे 32 परिवारों को राशन किट, 5000 परिवारों को स्वच्छता किट और 12 परिवारों को पोषण किट देकर मदद पहुंचायी गई।

एजुकेशन सपोर्ट– इसके अन्तर्गत आर्थिक स्थिति से कमजोर परिवार के बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए समिति द्वारा परिवार को सपोर्ट किया जाता है। ऐसे परिवार के बच्चों को सपोर्ट किया जाता है जो वास्तव मे शिक्षा प्राप्त करना चाहता है लेकिन माता पिता अपने बच्चों को शिक्षा के लिए मदद करने मे अश्मर्थ है **ऐसे 6 बच्चों को सपोर्ट किया गया है।**

रिस्क सपोर्ट– इसके अन्तर्गत सामाजिक क्षेत्र मे कार्य कर रहे सामाजिक कार्यकर्ताओं के बच्चों को आर्थिक सपोर्ट करना समिति का निर्णय है जिससे स्वास्थ्य सुविधा मिल सके। यह की समिति से जुड़े कार्यकर्ता व उनके परिवार के अन्य सदस्य जब कभी लम्बी व गंभीर बीमारी से जूझ रहा होता है तो समिति अपने कमेटी से विचार विमर्श कर सपोर्ट करने का निर्णय लेती है। **ऐसे 16 लोगों की मदद की गई है।**

बीज बैंक की स्थापना : मानव जीवन विकास समिति भारत रूरल फाउण्डेशन दिल्ली की मदद से दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा ब्लॉक मे 40 बीज बैंक की स्थापना कर जैविक बीज, खाद और जैविक दवाईयों का स्टोरेज किया है जिससे किसानों को प्रशिक्षण देकर जैविक खेती का काम शुरू किया है। इससे उत्पादकता तो बढ़ रही है साथ ही साथ रासायनिक युक्त खाद बीज का उपयोग करने से लोगों मे अनेको अनेक बीमारी का सामना करना पड़ रहा था बच्चों मे कुपोषण भी इसी वजह से बढ़ रहा था अब उसे भी रोका जा रहा है।

एनपीएम आधारित खेती को बढ़ावा : कार्यक्षेत्र के 22000 किसानों के लिए एक वरदान साबित हो रही है। जैविक खाद, कम्पोस्ट व वर्मीकम्पोस्ट खाद एवं कीटनाशक दवा के छिड़काव व उत्पादित अनाज से लोगों मे साईड इफेक्ट नही होता है साथ ही सभी किसान अपने आस पास से उत्पादित वनस्पति से ही कीटनाशक तैयार कर अच्छी उत्पादन ले रहे है, इससे रासायनिक दवाईयों मे खर्चा नही होता था है इससे साबित होता है कि यह एनपीएम पद्धति खेती के लिए वरदान है।

ग्रामसभा मोबलाईजेशन : ग्रामसभा पंचायतीराज का सबसे पावरफुल सत्ता माना गया है, ग्रामसभा द्वारा पारित प्रस्ताव कभी भी निरस्त नही होता है। एक वर्ष मे 4 ग्रामसभा लगाना अनिवार्य है इसके अलावा विशेष ग्रामसभा आयोजित की जा सकती है। ग्रामसभा मे कोरोना से बचाव की जानकारी दी गई साथ मे कोरोना गाईड लाईन का पालन करते हुए ग्रामसभा आयोजित करने को कहा गया है। ग्रामसभा मे महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने लोगों को जागरूक किया गया महिला सुरक्षा के मुद्दे जोड़ा जाये। कार्यक्षेत्र के 73 गांव मे जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामसभा को मजबूत किया गया।

उपलब्धियां

क्रं.	गतिविधियां	उपलब्धिां
1	वन अधिकार अधिनियम के तहत प्राप्त भूमि	234 एकड़ (67 पविार)
2	वन अधिकार को लेकर ब्लॉक, जिला एवं राज्य स्तरीय संवाद	6
3	प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि सहायता	14230
4	प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना	3021
5	प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना	2825
6	किसान क्रेडिट कार्ड	738
7	आयुष्मान कार्ड	3552
8	ग्रामसभा मोबलाईजेशन	73
9	कोविड टीकाकरण	32000
10	समाजिक सुरक्षा योजना का लाभ	1623
11	डद्यान विभाग कि ड्रिप, स्प्रिंकलर, कैरेट, वर्मी वेड एव सब्जियों के बीज से लाभान्वित किसान	328
12	आंगनवाड़ी का नवीनीकरण	1
13	शिक्षा – बच्चों का स्कूल मे दाखिला	1250
14	स्कालरशिप : एजुकेशन सपोर्ट	4
15	स्कालरशिप : रिस्क सपोर्ट	13
16	स्वास्थ्य – कुपोषित बच्चों को एनआरसी मे भर्ती।	95

प्रभाव

- वन अधिकार अधिनियम के तहत काबिज वन भूमि का अधिकार पत्र प्राप्त हुआ।
- वन अधिकार से प्राप्त भमि का समतलीकरण व खेती योग्य बनाया गया।
- वन अधिकार से प्राप्त भमि पर पानी की सविधा उपलब्ध कराई गई।
- अच्छी उपज लेने के लिए किसानों को एस.आर.आई. पद्धति से खेती कराई गई।
- अनुपजाऊ भूमि मे प्लान्टेशन कराया गया।
- नाडेप, भूनाडेप, कम्पोस्ट, वर्मीकम्पोस्ट खाद किसानों के घर तैयार कराया गया।
- जैव कीटनाशक प्रबंधन कराया गया।
- किसानों को सुविधानुसार बीज बैंक की स्थापना की गई।
- सूचना केन्द्र की स्थापना की गई लोगों को केन्द्र मे ही सुविधा मिल रही है।
- किचिन गार्डन से पोषण की गुणवत्ता मे सुधार हुआ है।
- ग्रामसभा मोबलाईजेशन से ग्रामसभा मे भागीदारी बढ़ी है।
- शासकीय योजनाओं का लाभ आसानी से लोगों तक पहुंच रही है।
- लोगों की आजीविका खड़ी करने स्वरोजगार को बढ़ावा मिला है।

भावी योजनाएं

- समिति के कार्य को दूसरे राज्यों मे फैलाना।
- आजीविका के साधन मे 30 हजार किसानों के साथ काम को मजबूत करना।
- कम से कम 5 जिले के 10 ब्लॉको मे सघन रूप से संगठन को मजबूत करना।
- रूरल ट्रिज्म को 8 सर्किट से बढ़ाकर 15 सर्किट तक पहुंचाना।
- ट्रेनिंग सेंटर को जैव विविधिता के रूप मे विकसित कर तैयार करना।
- सरकारी योजनाओं तक लोगों की पहुंच सुनिश्चित करना।
- युवाओं के साथ (ग्रामीण एवं शहरी) नेटवर्क खड़ा करना।
- महिला सशक्तिकरण, बाल अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य पर ज्यादा बल देना।
- प्राकृतिक खेती/जैविक खेती, बीज बैंक, अनाज बैंक को मजबूत करना।
- ग्राम स्तरीय संगठनों के सहयोग से 6 जैव उत्पाद इकाई की शुरूआत करना।
- स्व–रोजगार को बढ़ावा देना।
- 10 गैर कीटनासी प्रबंधन आधारित गांव बनाना।
- अलाईव के सहयोग से तुअर दाल एवं मसाले का प्रसंस्करण एवं मार्केटिंग करना।

फोटो

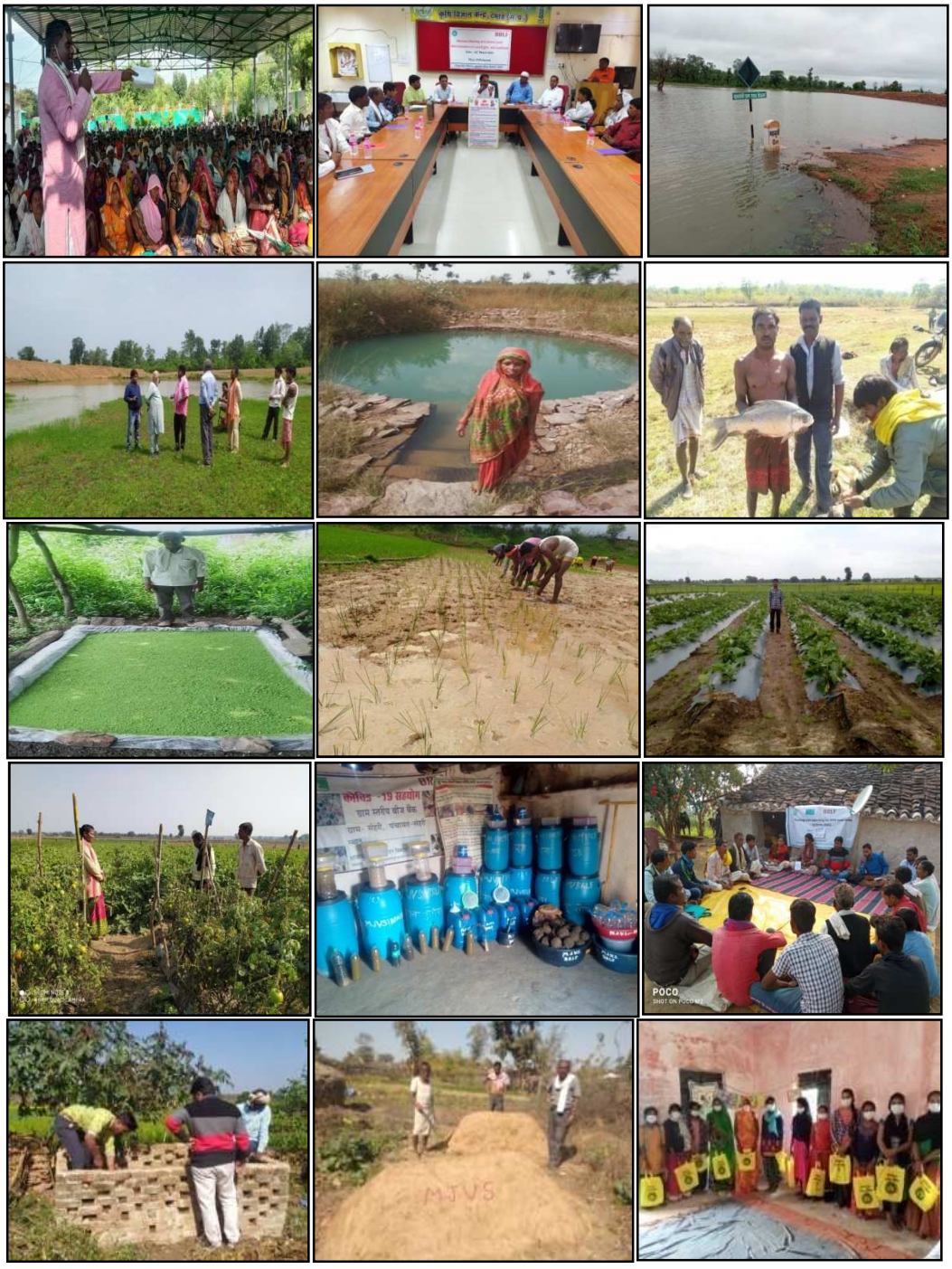

Celebrating 20 years

Celebrating 20 years

मीडिया कवरेज

गैर कीटनाशी प्रबंधन प्राकृतिक खेती क्षेत्र और समाज के लिए कल्याणकारी

राजपथ टुडे न्यूज. दमोह। एकता परिषद मानव जीवन विकास समिति कटनी बी आर एल एफ दिल्ली के सहयोग से गैर कीटनाशी प्रबंधन प्राकृतिक खेती कराने के साथ किसानों की आय बढाने का प्रयास किया जा रहा है। समिति सचिव निर्भय सिंह ने कहा कि रसानिक उर्वरकों कीटनाशक दवाओं आदि के उपयोग से कृषि की लागत बढने से अब कम लाभकारी ब्यवसाय बनती जा रही है। ऐसे शून्य बजट प्राकृतिक खेती की अवधारणा न केवल किसानों बल्कि देश ओर समाज के लिए भी कल्याणकारी साबित हो रही है। घनश्याम प्रसाद रायकवार ने कहा कि शून्य बजट प्राकृतिक कृषि ऐसी तकनीक है जिसमें कृषि करने के लिए न किसी रसायनिक उर्वरक का उपयोग किया जाता है और न ही बाजार से कीटनाशक दवाऐ खरीदने की जरूरत पडती है। नंदलाल सींग गौड़, सुरेश सींग गौड़ बमनोदा खदरी हार मैं शून्य बजट प्राकृतिक कृषि प्रारंभ की है लघु सीमांत किसान य छोटे किसान है जिनकी जोत का आकार छोटा होने के साथ ही कृषि मैं निवेश की क्षमता है। ऐसे किसानों के लिए महंगे संसाधनों वाली खेती कर पाना संभव नहीं है। ऐसी स्थिति मैं शून्य बजट प्राकृतिक कृषि एक अच्छा विकल्प है यह खेतों के साथ साथ मानव ओर पशु स्वास्थ्य तथा पर्यावरण के लिए भी सुरक्षित पध्दति है, इसलिए मानव जीवन विकास समिति के कार्यकर्ताओं द्वारा किसानों के साथ मिलकर गाँव मैं ही गैर कीटनाशी प्रबंधन प्राकृतिक दवाईयों का निर्माण समूहों के साथ मिलकर किया जा रहा है।

12 नईदुनिया जबलपुर, मंगलवार 06 जुलाई, 2021 — दमोह आसपास

आदिवासियों ने कहा-वनभूमि से किया बेदखल तो होंगे गंभीर परिणाम, दावा फार्मों पर करें विचार

तेंदूखेड़ा। अपनी मांगों के संबंध में नारेबाजी करते आदिवासी। ● नईदुनिया

तेंदूखेड़ा (नप्र)। पूरे जिले के साथ तेंदूखेड़ा ब्लाक में गरीब और भूमिहीन आदिवासी कई वर्षों से उबड़, खाबड़ वन भूमि पर कब्जा कर उसे सुधारकर खेती योग्य बना रहे हैं, लेकिन वन विभाग ऐसे लोगों को वनभूमि से हटाने की फिराक में है। इसलिए एकता परिषद ने कलेक्टर को ज्ञापन देते हुए मांग की है कि उनके दावा फार्मों पर जब तक विचार नहीं किया जाता तब तक उन्हें नहीं हटाया जाए नहीं तो इसके गंभीर परिणाम होंगे।

एकता परिषद एक गैर राजनैतिक जन संगठन है जो जल, जंगल और जमीन के मुद्दे पर वर्षों से काम कर रहा है। सरकार ने आदिवासी वनवासियों के हित में अनुसूचित जनजाति और अन्य वन अधिकारों की मान्यता अधिनियम 2006, नियम 2008 व संशोधन नियम 2012 बनाया। जिसके तहत वनवासी आदिवासी लोगों ने वन भूमि पर हक प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिये आवेदन लगाए हैं। जिसमें कुछ लोगों के आवेदन मान्य कर लिये गये और कुछ लोगों के अमान्य कर दिए। जिला स्तरीय वन अधिकार समिति द्वारा उन्हीं अमान्य आवेदनों के लिए आवेदकों ने मप्र वन मित्र पोर्टल पर शिकायत दर्ज करवाई, पोर्टल की नियमावली के अनुसार वन अधिकार कानून का जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन नहीं किया गया। वन विभाग वाले बिना वन मित्र पोर्टल पर दर्ज दावा फार्मों का निराकरण किए बिना ही आदिवासियों को वन भूमि से बेदखल करने की कार्रवाई कर रहे हैं।

जिसके विरोध में अब आदिवासियों के समर्थन में एकता परिषद भी सामने आई है। ज्ञापन में बताया कि 26 जून को वन परिक्षेत्र रेंज तारादेही के कर्मचारी कंपार्टमेंट 241 बीट बरपटा ग्राम कोसमदा गए और वन भूमि पर काबिज आदिवासियों को खेती करने से मना किया। जबकि आदिवासी उसी भूमि पर आवास बनाकर वर्षों से रह रहे हैं और खेती कर रहे हैं।

ज्ञापन में बताया गया कि 25 लोगों ने वन भूमि दावा फार्म भरे थे। जिसमें से बाबूलाल गौंड पिता कंछेदी सिंह गौंड को 1.053 हैक्टेयर वन भूमि का हक प्रमाण पत्र दे दिया गया है 24 लोग विचाराधीन हैं। ऐसे दमोह जिले में 12600 प्रकरणों पर पुन: जांच कराने की अवश्यकता है। जब तक इन प्रकरणों की पुन: जांच नहीं हो जाती तब तक वन भूमि पर काबिज आदिवासी वनवासियों को बेदखल न किया जाए।

एकता परिषद के जिला अध्यक्ष घनश्याम प्रसाद रैकवार ने बताया है कि उन्होंने 28 जून को दमोह कलेक्टर को ज्ञापन दिया था। जिसमें दावा फार्म पर जांच कराने की मांग की थी जो वन मित्र पोर्टल पर दर्ज हैं, लेकिन उनकी जांच नहीं हुई।

यह भी लिखा था कि जब तक दावा फार्मों की जांच नहीं हो जाती तब तक वनभूमि पर काबिज लोगों को बेदखल न किया जाए। ज्ञापन के बाद दावा फार्मों की जांच तो नहीं हुई, लेकिन वन विभाग के अधिकारी जो झलौन और तारादेही में पदस्थ हैं वह आदिवासियों को खेती करने से मना कर रहे हैं और धमका भी रहे हैं। यदि आदिवासी वन भूमि से बेदखल होते हैं तो कलेक्ट्रेट का घेराव किया जाएगा।

मत्स्योद्योग विभाग की योजनाओं के लिए आवेदन 30 सितंबर तक

पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर हितग्राहियों का होगा चयन

तेंदूखेड़ा। मत्स्य पालन से जुड़े कृषकों तथा मत्स्य पालन करने के इच्छुक जिले के व्यक्तियों के लिए वित्तीय वर्ष 2022-23 मे भारत सरकार द्वारा संचालित प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना अंतर्गत विभिन्न योजनाओं का लाभ लेने हेतु कार्यालय सहायक संचालक मत्स्योद्योग में आवेदन आमंत्रित किये गये है।

सहायक संचालक मत्स्योद्योग ने बताया कि इच्छुक मत्स्य पालक/व्यक्ति मत्स्य विभाग में संपर्क कर विभिन्न योजनाएं जैसे मत्स्य बीज उत्पादन हेतु हैचरी निर्माण, संवर्धन पोंड निर्माण, नवीन तालाब निर्माण, मत्स्य पालन हेतु इनपुट्स की व्यवस्था, जलाशय में मत्स्य बीज फिंगरलिंग संचयन, रंगीन मछलियों की रियरिंग एवं ब्रीडिंग ईकाई स्थापना, मत्स्य मार्केटिंग हेतु क्योस्क, मोटरसाईकिल विथ आईस बाक्स, साईकिल विथ आईस बाक्स, रेफ्रीजरेटर व्हीकल, इंसुलेटेड व्हीकल, जलाशय में केज/पेज स्थापना, फिश फीड मिल प्लांट, आईस प्लांट, बायोफ्लोक प्लांट, आर.ए.एस. यूनिट, इत्यादि योजनाओं का लाभ ले सकते है।

उन्होंने बताया कि इन योजना में सम्मिलित गतिविधियों का लाभ लेने हेतु इच्छुक व्यक्ति/मत्स्य समिति/समूह कार्यालय सहायक संचालक मत्स्योद्योग में 30 सितंबर 2021 तक आवेदन कर सकते है। क्लस्टर आधारित तथा पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर हितग्राहियों को चयन में प्राथमिकता दी जाएगी।

खाद व कंबल किए वितरण

तेंदूखेड़ा @ पत्रिका. बुधवार को ग्राम बम्होरी, जामुन, धनगौर मानव जीवन विकास समिति कटनी भारत रूरल लाइवलीहुड फाउंडेशन दिल्ली के सहयोग से ब्लॉक तेंदूखेड़ा की ग्राम पंचायतों में ऑर्गेनिक खेती को प्रोत्साहन देने के लिए किसानों को वर्मी कंपोस्ट खाद व ग्रामों में बेसहारा बुजुर्ग महिला पुरुषों विकलांगो को कंबल वितरित किए। इस अवसर पर ब्लॉक समन्वयक नरेश खटीक, घनश्याम प्रसाद, पंचायत सहायक अजित सिंह लोधी, रामकुमार सिंह व भगवान सिंह मौजूद रहे।

जानकारी — मानव जीवन विकास समिति कर रही किसानों की समस्या का निराकरण

किसानों को गांव में ही खाद बनाने का उपाय बता रहे

तेंदूखेड़ा। खेत में मौजूद किसान। ● नईदुनिया

तेंदूखेड़ा। वर्तमान समय में कीटनाशक दवाओं के रेट बढ़ने से किसान काफी परेशान हो गए हैं और उनको अपनी उपज बढ़ाने के लिए बढ़े दामों की कीटनाशक दवाइयां खरीदनी पड़ती हैं। इन समस्याओं के निराकरण के लिए किसानों को गांव में ही खाद बनाने का उपाय मानव जीवन विकास समिति कटनी द्वारा किया जा रहा है।

गांव की खेती के लिए गांव में ही बनने वाली खाद को तेंदूखेड़ा ब्लाक के कई गांव के किसान अपना रहे हैं। कुछ किसानों ने जैविक खाद बनाकर उसे अपनी फसल में डालकर फसल तैयार भी की है और उसका फायदा भी मिला है। एकता परिषद मानव जीवन विकास समिति कटनी बीआरएलएफ दिल्ली के सहयोग से गैर कीटनाशी प्रबंधन प्राकृतिक खेती कराने के साथ किसानों की आय बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। समिति सचिव निर्भय सिंह ने कहा कि रासायनिक उर्वरकों कीटनाशक दवाओं आदि के उपयोग से कृषि की लागत बढ़ने से अब कम लाभकारी व्यवसाय बनती जा रही है। ऐसे शून्य बजट प्राकृतिक खेती की अवधारणा न केवल किसान बल्कि देश और समाज के लिए भी कल्याणकारी साबित हो रही है। घनश्याम प्रसाद रायकवार ने कहा कि शून्य बजट प्राकृतिक कृषि ऐसी तकनीक है जिसमें कृषि करने के लिए न किसी रसायनिक उर्वरक का उपयोग किया जाता है और न ही बाजार से कीटनाशक दवाएं खरीदने की जरूरत पड़ती है। नंदलाल सिंह, सुरेश सिंह गौंड ने बमनोदा खदरी हार में शून्य बजट प्राकृतिक कृषि प्रारंभ की है। लघु सीमांत किसान व छोटे किसान जिनकी जोत का आकार छोटा होने के साथ ही कृषि में निवेश की क्षमता है। ऐसे किसानों के लिए महंगे संसाधनों वाली खेती कर पाना संभव नहीं है। ऐसी स्थिति में शून्य बजट प्राकृतिक कृषि एक अच्छा विकल्प है। यह खेतों के साथ साथ मानव और पशु स्वास्थ्य व पर्यावरण के लिए भी सुरक्षित पद्धति है। इसलिए मानव जीवन विकास समिति के कार्यकर्ताओं द्वारा किसानों के साथ मिलकर गांव में ही गैर कीटनाशी प्रबंधन, प्राकृतिक दवाइयों का निर्माण समूहों के साथ मिलकर किया जा रहा है।

बनांचल गाँव मैं सिचाई के लिए पानी न उपलब्ध होने के कारण लोगों ने श्रमदान कर खोदे कुआँ

तेंदूखेड़ा/दमोह। एकता परिषद मानव जीवन विकास समिति कटनी जिला दमोह मध्य प्रदेश के द्वारा ब्लॉक तेदूखेडा के ग्रामों मैं जल संरक्षण के प्रति ग्रामवासियों को जागरूक किया जा रहा है साथ ही लोगों की स्थाई आजीविका खडी हो गाँव मैं लोगों के साथ लोगों के अनुसार मिलकर कृषि आधारित गैर कृषि आधारित जिससे लोगों की आर्थिक स्थिति मजबूत हो ओर आय बढे किसानों की घनश्याम प्रसाद रायकवार अध्यक्ष एकता परिषद ने जानकारी दी कि आदिवासी वनवासी भाईयों को बन भूमि अधिकार पत्र प्राप्त हुऐ है लेकिन शासन की मंशानुसार महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी के तहत ऊबड खाबड भूमि को समतलीकरण मेंढबंदी कार्य कराने की बाध्यता है लेकिन उक्त योजना का लाभ बास्तबिक किसानों को नहीं मिल रहा है जिससे लोगों ने ग्रामपंचायत भैंसा ब्लॉक तेदूखेडा जिला दमोह मध्य प्रदेश मैं स्वयं अपने श्रमदान कर मेंढ बंधान ओर कुआँ खोद रहे हैं और बंजर भूमि को सिंचित करने का किया प्रयास।

तेन्दूखेड़ा/दमोह। केंद्र सरकारद्वारा संचलित मनरेगा योजना अगर निस्वार्थ भावना से लागू की जाए तो उसका सीधा फायदा गरीब लोगों के परिवार वालो को मिलता है।इसके फायदे कई प्रकार से मिलता है।एक तो जो मजबूर इस योजना के तहत मजदूरी करता है इसको मजदूरी मिलती है।जिससे उसके परिवार का भरण पोषण होता है।और जो मजदूरी से निर्माण होता बनाया जाता है तो उसका भी फायदा अन्य ग्रामीणों को होता है।यही मनरेगा योजना ग्राम पंचायत समदई में खूब फल फूल रही है जिसका फायदा दो तरफा हो रहा है।ग्राम पंचायतसमदई के चिन्हित जगहों पर ब्यापक रूप में सार्वजनिक खकरी बन रही है।खकरी निर्मांण कार्य ग्राम पंचायत में पिछले किविड के समय से बनाई जा रही है।ग्राम पंचायत समदई में खकरी के माध्यम से गरीब मजबूरों को रोजगार मिल रहा है।जिससे ग्राम पंचायत समदई के लोगो का पलायन रुक गया है और मजदूरी का भुगतान आसानी से होने के कारण लोग खकरी बनाने में अधिक ब्यस्त रहते हैं।दूसरा देखा जाए तो यह खकरी लोगो के खेतों के किनारे किनारे से बनाई गई है।जिस कारण से किसानों की फसलो को मवेशियों से सुरक्षा मिल रही है।खकरी बनने से फसलो का नुकसान नहीं हो रहा है जिस कारण से किसानो कि आय में भी बढ़ोत्तरी दर्ज की गई है।समदई ग्राम पंचायत के अधिकतर निवासी भूमि हीन है और उनकी आय के साधन कोई भी नही है।इस स्थिति में ग्राम पंचायत समदई के रोजगार सहायक धर्मेंद्र यादव ने मनरेगा को विस्तार देते हुए सार्वजिनक खकरी का निर्माण कार्य लगातार चलवा रहे हैं।जिस कारण भूमि हींन मजदूरों को गाँव मे ही रोजगार मिल जाता है औरऔर इन परिवारों की रोजी रोटी सुचारू रूप से चल रही है।केंद्र सरकार की यह योजना इन मजदूरों के लिये किसी बरदान से कम साबित नहीं है और ग्रामपँचायत में इसका ईमानदारी से संचालन हो रहा है।

गैर कीटनाशी प्रबंधन प्राकृतिक खेती क्षेत्र ओर समाज के लिए कल्याणकारी

तेदूखेडा। मानव जीवन विकास समिति कटनी बी आर एल एफ दिल्ली के सहयोग से गैर कीटनाशी प्रबंधन प्राकृतिक खेती कराने के साथ किसानों की आय बढाने का प्रयास किया जा रहा है समिति सचिव निर्भय सिंह ने कहा कि रसानिक उर्वरकों कीटनाशक दवाओं आदि के उपयोग से कृषि की लागत बढने से अब कम लाभकारी ब्यवसाय बनती जा रही है ऐसे शून्य बजट प्राकृतिक खेती की अवधारणा न केवल किसानों बल्कि देश ओर समाज के लिए भी कल्याणकारी साबित हो रही है घनश्याम प्रसाद रायकवार ने कहा कि शून्य बजट प्राकृतिक कृषि ऐसी तकनीक है जिसमें कृषि करने के लिए न किसी रसायनिक उर्वरक का उपयोग किया जाता है और न ही बाजार से कीटनाशक दवाऐ खरीदने की जरूरत पडती है नंदलाल सींग गौड़, सुरेश सींग गौड़ बमनोदा खदरी हार मैं शून्य बजट प्राकृतिक कृषि प्रारंभ की है लघु सीमांत किसान य छोटे किसान है जिनकी जोत का आकार छोटा होने के साथ ही कृषि मैं निवेश की क्षमता है ऐसे किसानों के लिए महंगे संसाधनों वाली खेती कर पाना संभव नहीं है ऐसी स्थिति मैं शून्य बजट प्राकृतिक कृषि एक अच्छा विकल्प है यह खेतों के साथ साथ मानव ओर पशु स्वास्थ्य तथा पर्यावरण के लिए भी सुरक्षित पध्दति है,इसलिए मानव जीवन विकास समिति के कार्यकर्ताओं द्वारा किसानों के साथ मिलकर गाँव मैं ही गैर कीटनाशी प्रबंधन प्राकृतिक दवाईयों का निर्माण समूहों के साथ मिलकर किया जा रहा है।

दैनिक भास्कर — दमोह 30-12-2021

आयोजन... मानव जीवन विकास समिति ने ग्रामीणों को वर्मी कंपोस्ट व कंबल बांटे

तेंदूखेड़ा| बुधवार को मानव जीवन विकास समिति के सहयोग से ब्लॉक तेंदूखेड़ा के ग्रामों में वर्मी कंपोस्ट खाद व जरूरतमंदों को कंबल प्रदान किए गए। ग्राम बम्होरी, जामुन, धनगौर में समिति के सदस्यों ने ऑर्गेनिक खेती को प्रोत्साहन देने किसानों को वर्मी कंपोस्ट खाद एवं ग्रामों में बेसहारा बुजुर्ग, महिला पुरुषों, दिव्यांगों को कंबल प्रदान किए। इस अवसर पर ब्लॉक समन्वयक नरेश खटीक, घनश्याम प्रसाद, पंचायत सहायक अजित सिंह लोधी, रामकुमार सिंह, भगवान सिंह मौजूद रहे।

Celebrating 20 years